गाद प्रबंधन नीति को शीघ्र अंतिम रूप दे केंद्र सरकार : संजय झा

- भारत में डैम सेफ्टी गवर्नेंस हेतु बांध सुरक्षा अधिनियम-2021 विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला और मंत्री सम्मेलन में शामिल हुए जल संसाधन मंत्री संजय झा
- जल प्रबंधन के क्षेत्र में बिहार की उपलब्धियों और जरूरतों को संजय झा ने केंद्र के सामने रखा
- नेपाल में हाई डैम के निर्माण के लिए तत्काल शुरू हो पहल

नई दिल्ली में गुरुवार को आयोजित कार्यशाला एवं मंत्री सम्मेलन में जल संसाधन मंत्री संजय झा को मोमेंटो प्रदान करते केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत। ● सौ : विभाग

राज्य ब्यूरो, पटना : बिहार के जल संसाधन और सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री संजय झा ने गुरुवार को नई दिल्ली में जल शक्ति मंत्रालय द्वारा 'भारत में डैम सेफ्टी गवर्नेंस हेतु बांध सुरक्षा अधिनियम 2021' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला एवं मंत्री सम्मेलन में जल प्रबंधन की दिशा में बिहार की उपलब्धियों और जरूरतों से केंद्र को अवगत कराया। संजय झा ने गंगा नदी पर फरक्का बराज बनने के बाद से बिहार में गाद की बढ़ती समस्या और जलजमाव का जिक्र करते हुए राष्ट्रीय गाद प्रबंधन नीति शीघ्र लागू करने की मांग की।

उन्होंने कहा कि जल शक्ति मंत्रालय ने दिसंबर-2021 में एक ड्राफ्ट नेशनल फ्रेमवर्क पर मंतव्य हेतु राज्यों को उपलब्ध कराया था। इस पर भी बिहार सरकार का मंतव्य उपलब्ध करा दिया गया है। संजय झा ने कहा कि हमें यह बताते हुए खुशी है कि बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में वर्ष 2005 में सरकार बनी और वर्ष 2006 में ही 'बांध सुरक्षा अधिनियम 2006' को अधिनियमित कर दिया गया। साथ ही उसके प्रविधानों के आलोक में 'राज्य बांध सुरक्षा समिति' तथा 'बांध सुरक्षा प्रकोष्ठ' का गठन भी कर दिया गया था। हमारे बिहार में वर्तमान में 27 वृहद डैम और पांच प्रमुख बराज हैं।

संजय झा ने कहा कि बिहार में स्थित ज्यादातर बड़े डैम 30 वर्ष से अधिक पुराने हो गए हैं। समय के साथ सिल्ट जमा होने के कारण उनकी संचयन क्षमता काफी कम हो गई है। राज्य के विभिन्न डैम की संचयन क्षमता के पुनर्स्थापन के लिए राज्य सरकार कार्य करना चाह रही है, जिसमें केंद्र से तकनीकी और वित्तीय सहयोग की अपेक्षा है। संजय झा ने दक्षिण बिहार में सिंचाई की क्षमता को सुदृढ़ करने के लिए इंद्रपुरी जलाशय योजना जैसे अंतरराज्यीय मुद्दों को सुलझाने में केंद्र से पहल का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि सोन नदी के जल पर आधारित सोन सिंचाई प्रणाली लगभग 150 वर्षों से कार्यरत है। वर्ष 1968 में, इस पर पूर्व निर्मित एनीकट के स्थान पर इंद्रपुरी बराज का निर्माण हुआ था। उसी समय बराज के अपस्ट्रीम में करीब 80 किलोमीटर दूर एक जलाशय का निर्माण भी प्रस्तावित था। इसके लिए प्रस्तावित स्थल बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश की सीमा पर अवस्थित है। इसका नाम पहले कदवन जलाशय योजना था। वर्तमान में यह इंद्रपुरी जलाशय योजना के नाम से प्रस्तावित है और केंद्रीय जल आयोग में स्वीकृति के लिए विचाराधीन है। यदि केंद्र सरकार राज्य की मदद करे, तो बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में अवस्थित इस जलाशय के निर्माण की स्वीकृति शीघ्र प्राप्त हो सकेगी और सोन नदी के जल का समुचित उपयोग सुनिश्चित हो सकेगा।

जल शक्ति मंत्री को दिया बिहार आकर रबर डैम देखने का न्योता

संजय झा ने केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत को बिहार आकर प्रदेश के पहले रबर डैम को देखने का निमंत्रण दिया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की परिकल्पना के अनुरूप गया में विश्व प्रसिद्ध विष्णुपद मंदिर के पास बिहार के पहले रबर डैम का निर्माण कराया जा रहा है। फल्गू नदी का जल सालोभर उपलब्ध होगा। गया में देश-विदेश से बड़ी संख्या में लोग हर साल पिंडदान के लिए आते हैं, जिन्हें गर्मियों में फल्गू नदी में जल सूख जाने से परेशानी होती है।